*****याद आ गई*****

सुबह सुबह मेरे शहर की
याद आ गई,
जिस खिड़की से देखता था
याद आ गई,
जिस जगह खेले बचपन मे हम
याद आ गई,
मुझे देख मुहँ मोड़ने वालों की
याद आ गई,
हसरतें जो दिल मे रह गई
याद आ गई,
जिसने मुड़ के कभी ना देखा
याद आ गई,
जिनको नफरत है मेरी सूरत से
याद आ गई,
बरसों से जिनको देखा नही
याद आ गई,
जिनकी सूरत देखे बिना जिये नही
याद आ गई,
जिसके ना दिखने से होती थी तड़फ
याद आ गई,
हर वक्त दर्द देने वालों की
याद आ गई,
जो ख्वाब जीवन मे ना हुवे पूरे
याद आ गई,
जिनसे ना अब मिल पाऊँगा
याद आ गई,
जो गीत कभी गाये थे उनकी
याद आ गई,
पता नहीं आज क्यूँ मेरे दोस्तों की
याद आ गई |

✍ **गोपाल कृष्ण व्यास**